

स्पर्श-मोक्षदिग्ज्ञानप्रकारः —

मद्यत्तदनाशाङ्घ्रिभिः प्राक् पश्चात्—

इन्दोः स्पर्शमोक्षोः स्तः । उवणगोः तु व्यस्तम् । खगासात्

खगासात् खच्चपादैः परे प्राक्—

दत्तैरिन्दोर्मौलनोन्मीलने स्तः ॥

अन्वयः— मद्यत् प्राक् पश्चात् च दनाशाङ्घ्रिभिः, इन्दोः स्पर्शमोक्षोः स्तः । उवणगोः तु व्यस्तम् । खगासात् परे प्राक् दत्तैः खच्चपादैः इन्दोः मीलनोन्मीलने स्तः ।

तारा— मद्यत् ग्रहणस्य मध्यस्थविह्वत्, प्राक् पूर्व, पश्चात् पश्चात् पश्चिमं च दत्तैः दनाशाङ्घ्रिभिः ग्राह्यदिक्चरणैः, इन्दोः सुधांशुः, स्पर्शमोक्षोः पूर्वस्थां दिशि स्पर्शः, पश्चिमायां दिशि मोक्षः, इत्येवा व्यस्तथा, स्तः भवतः । उवणगोः सूर्यस्य, तु व्यस्तं चन्द्रमसः विपरीत क्रमेण स्पर्शमोक्षी भवत इति व्यस्तथा । तथा खगासात् खगासविह्वत्, परे, प्राक् क्रमेण दत्तैः खच्चपादैः खगासचरणैः, इन्दोः चन्द्रमसः, मीलनोन्मीलने स्तः । तद्वथा— पश्चिमायां दिशि सम्मीलनं, पूर्वस्थां दिशि उन्मीलनमित्याशयः ।

भाषार्थः— ग्रहण के बीच में स्थित बिन्दु के समीप से एक रेखा ग्राह्यांघ्रि की पूर्वदिशा की ओर दें । वही चन्द्रग्रहण का स्पर्श होता है और दूसरी रेखा पश्चिम की ओर दें । उस स्थान पर चन्द्रग्रहण का मोक्ष होता है ।

सूर्यग्रहण की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है । इसमें मध्यविह्व के समीप से ग्राह्यांघ्रि रेखा की पश्चिम की ओर दें । वही पर सूर्यग्रहण का स्पर्श होता है और पूर्व की ओर दी गयी रेखा में सूर्यग्रहण का मोक्ष होता है । इसी प्रकार खगास के मध्यविह्व के समीप से

उस वृत्त में दिशाओं की रेखा निकालकर उसके 9 से लेकर 32 भाग करें। उसके बाद शर की जो दिशा हो उस दिशा के उत्तर अथवा दक्षिण दिशा के बिन्दु से यदि वलनांश उत्तर हो, तो विपरीत क्रम से शर की दिशा दें और यदि वलनांश दक्षिण हो, तो सीधे क्रम से शर की दिशा दें और यदि वलनांश क्योंकि उसी दिशा में मध्यगणना होता है। इसकी विपरीत दिशा में यकनाय अथवा शेष बिम्ब का मध्य होता है।

वलन्य - दिशाओं का यव्य-अयव्य विचार इस प्रकार करें। पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर यह क्रम यव्य है और पूर्व, उत्तर, पश्चिम, दक्षिण यह क्रम अयव्य है।

डॉ० सुद्विष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० युवसेना,
पूर्णिमा।

अहमद्यम्

चन्द्रमहाणाविकारः शास्त्री-III

Date 05-11-20
Page 5

आसादिचरणसाधनं महामध्यदिकसाधनं च —

मानैक्याद्दृढतात् खण्डनपिहितान्मूलं तदाशाङ्क्यः।
खट्वन्नं सदलैक्युक् च गदिताः खट्वन्नजाशाङ्क्यः।
सव्यासव्यमपावुद्वग्वलनजाशाङ्क्यीन् प्रदद्याच्छरा-
शायाः स्याद्महमध्यमन्यदिशि खण्डनासोऽथवा शेषकम् ॥

अन्वयः— मानैक्याद्दृढतात् खण्डनपिहितान्
मूलं तदाशाङ्क्यः। सदलैक्युक् खट्वन्नं च खट्वन्नजा-
शाङ्क्यः गदिताः। शरशायाः अपावुद्वग्वलनजा-
शाङ्क्यीन् सव्यासव्यं प्रदद्यात्। महमध्यं स्यात्।
अन्यदिशि खण्डनासः अथवा शेषकं।

तारा— मानैक्याद्दृढतात् आद्यगताहकयोमनि-
क्यखण्डनं कृत्वात्, खण्डनपिहितान् खण्डनगतासमा-
नात्, मूलं तदाशाङ्क्यः तस्य गतासस्य आशाङ्क्यो
दिकचरणः, स्युः। च पुनरेवं प्रकारेण, सदलैक्युक्
मानदलान्तरस्युक्, खट्वन्नं खण्डनासं, खट्वन्नजाशाङ्क्यः
खण्डनासदिकचरणः, गदिताः कथिताः। शरशायाः
शरदिवाः, अपावुद्वग्वलनजाशाङ्क्यीन् दक्षिणैतर-
वलनजदिकचरणान्, सव्यासव्यं दक्षिणवलनजाशाङ्क्यीन्
सव्यम् अर्थात् दक्षिणक्रमेण, उत्तरवलनजाशाङ्क्यीन्,
असव्यं वामक्रमेण, प्रदद्यात्। तत्र विन्दौ, महमध्यं
मध्यमहाणं, स्यात्। एवञ्च अन्यदिशि तद्विद्वदिशि,
खण्डनासः अथवा शेषकं विम्बमात्रावशिष्टं, स्यात्।

आधारः— गतास को ६० से गुणा करें। जो
गुणनफल हो उसमें पूर्वोक्त मानैक्यखण्ड का भाग
देने से प्राप्त लविक का वर्गमूल निकालें। वह अंगुलादि
माप्यांश होना है। खण्डनास में १ अंगुल ३० प्रत्यंगुल
जोड़ने से प्राप्त योगफल खण्डनासांश होना है।

दाद्य विम्ब के आठे सूत्र से एक वृत्त खींचें।

खगोलशास्त्रि रेखा पश्चिम की ओर दी गयी हो, तो वहाँ खगोलशास्त्रि स्पर्श होता है। यदि खगोलशास्त्रि रेखा पूर्व की ओर हो, तो वहाँ खगोलशास्त्रि होकर मोड़ होता है।

सूर्यग्रहण में इसके विपरीत होता है। खगोलशास्त्रि के सिद्ध से पूर्व की ओर खगोलशास्त्रि हो, तो वहाँ खगोलशास्त्रि का स्पर्श होता है तथा पश्चिम की ओर दिया हो तो वहाँ का खगोलशास्त्रि का मोड़ होता है।

डॉ० सुदिवट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
श० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूरियाँ।